वी.यू. की पहलः नीलगाय (रोजेड) जनसंख्या नियंत्रण में वैक्सीन का प्रयोग

नीलगाय मृग प्रजाति का शाकाहारी वन्यप्राणी है जो दुनिया के सभी प्रकृतिवास में पायी जाती है। भारत में 6 मृग प्रजातियॉ है जिसमें नीलगाय सर्वाधिक विशालकाय मृग प्रजाति है इसके अलावा चौसिंगा, चिंकारा, कृष्ण मृग तिब्बतीय चिंकारा आदि भी पाये जाते है जो जंगल ओर ग्रामीण इलाको के तटीय स्थानों में हजारो की सख्या में रहते है।किसानो की फसल नष्ट करने के कारण भारत सरकार ने नीलगाय को हानिकारक वन्यप्राणियो की श्रेणी में रखा है। सन 1972 में वाईल्डलाईफ प्रोटेक्शन अधिनियम का कड़ाई से पालन कराये जाने के कारण नीलगाय और कृष्णमृगो की संख्या विष्फोटक स्थित में पहुंच गयी है। कृष्णमृग से फसलो का नुकसान अपेक्षाकृत कम मगर नीलगाय किसानो के लिए सरदर्द साबित हो रही है। ऐसी दशा में इसकी जनसंख्या रोकने हेतु अभी तक कोई कारगर कदम नही उठाये गये। बिहार और उत्तर प्रदेश सरकारो ने इन्हें कलिंग करने की योजना भी बनायी मगर पशु अत्याचार अधिनियम के चलते वन्यजीव प्रेमियो ने इसका घनघोर विरोध किया, अन्तः यह योजना ठण्डे वस्ते में चली गयी। नीलगाय के प्रति भ्रांतिमय धार्मिक आस्था के चलते इसकी जनसंख्या कुछ प्रदेशो में इतनी अधिक हो गयी है कि उस पर नियंत्रण करना मुश्किल हो रहा है। इसकी रोकथाम हेतु सबसे पहले इसका नाम नीलगाय की जगह रोजेड रखा गया ताकि गौवंश से लोग भ्रमित न हो। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नीलगाय का उद्‌भव गौवंश, बकरी, उंट तथा हिरन प्रजाति के जीनपूल के सामजस्य से हुआ है। यह अत्यंत चौकन्ना और विशालकाय शाकाहारी वन्यप्राणी है जो किसान के खेते में चरता कम रौंदता ज्यादा है जिससे किसान की फसल समूल नष्ट हो जाती है। वन्यजीव का आखेट मानवीय मूल्यों के सापेक्ष में नही रखा जा सकता इसी दृष्टिकोण को ध्याान में रखते हुये कलिंग करने की अपेक्षा जनसंख्या पर नियंत्रण किये जाने हेतु बधियाकरण या गर्भनिरोधक तकनीकियो की तरफ वैज्ञानिकों का ध्यान जाने लगा।

अभी हाल ही में हारमोनल कांन्ट्रासेप्टिव (गर्भ निरोधक) पिल्स पर अनुसंधान अनुप्रयोग अत्याधिक चर्चा में है जिसका उपयोग कर जनसंख्या पर नियंत्रण किया किया जा सकता है। इसी सिद्धांत को मद्‌देनजर रखते हुये नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ वाईल्डलाईफ फारेंसिक एण्ड हेल्थ के वैज्ञानिको ने गोनेडोट्रोपिक रिलीजिंग हार्मोन (GnRH) और जोना पेल्युसिडा से विकसित की जाने वाली वैक्सीन निर्माण हेतु एक अनुसंधान परियोजना राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, मघ्यप्रदेष सरकार को प्रस्तुत की है, जिसकी सैद्धांतिक स्वीकृति प्रॉप्त हूयी है। लगभग 5 करोड़ की लागत से चलाई जाने वाली इस परियोजना से गर्भ निरोधक वैक्सीन का निर्माण किया जायेगा जो वन विभाग के सहयोग से नीलगाय के नर तथा मादा दोनो में बांझपन लाने में कारगर साबित होगी और नीलगाय जन्मदर नियंत्रण मे मील का पत्थर बनेगी। इस परियोजना की कार्य योजना विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. प्रयागदत्त जुयाल के नेतृत्व में, संचालक डॉ. बी.सी. सरखेल, डॉ ए.बी. श्रीवास्तव डॉ. के.पी. सिंह, डॉ. काजल जादव, डॉ. निधि राजपूत तथा डॉ. अमोल रोकड़े आदि वैज्ञानिको के सम्मलित प्रयासो से बनायी गयी है। तथा देश के अन्य संस्थाानो से कन्सलटैन्ट वैज्ञानिको क्रमशः डॉ. अमित गोयल, भारतीय जैव प्रोद्यगिकी संस्थान हैदराबाद तथा आइसिएआर के प्रोफेसर इमरीटस डॉ. आर.एस. गुप्ता आदि का सहयोग प्राप्त कर यह वैक्सीन बनायी जायेगी। निश्चित रूप से नीलगायों की जनसंख्या नियंत्रण पर यह अनुसंधान परियोजना संस्कारधानी और मध्यप्रदेश के लिए गौरव की बात होगी तथा देश के अन्य प्रदेशो मे भी इसका उपयोग कर नीलगाय की बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण किया जा सकेगा।